

आधुनिक समय मे होने वाले रोगों का कारण अधारणीय वेगो का धारण

Dr. Anil Kumar
MD (Panchkarma), Asst. Professor,
LBS Mahila Ayurvedic College and Hospital,
Bilaspur (Yamunanagar)

आचार्यों ने रोगों से बचने के लिये आधारणीय वेगो का वर्णन किया है । आधारणीय वेगो को धारण करने से मनुष्य अनेक रोगो से ग्रस्त हो जाता हैं । हम इन छोटी -२ बातो का ध्यान आजकल के वयस्त जीवन मे नहीं रख पाते हैं । इसलिए आज समाज रोगो कि तरफ़ भाग रहा हैं । आचार्य वाग्भट ने १३ प्रकार के आधारणीय वेगो का वर्णन सूत्र स्थान के चतुर्थ अध्याय मे किया है । जिनका वर्णन निम्न हैं :-

- | | | |
|---------------------|-----------------|--------------------------|
| १. अपान वायु का वेग | २. मल का वेग | ३. मूत्र का वेग |
| ४. छींक का वेग | ५. प्यास का वेग | ६. भूख का वेग |
| ७. निद्रा का वेग | ८. कास का वेग | ९. श्रमजनित श्वास का वेग |
| १०. जंभाई का वेग | ११. आंसू का वेग | १२. वमन का वेग |
| १३. शुक्र का वेग | | |

अधारणीय वेगो की चिकित्सा का वर्णन करते हुये उन्होने उदगार का भी वर्णन किया है । उपरोक्त दिये आधारणीय वेगो को धारण करने से भिन्न-२ प्रकार कि बिमारियों से मनुष्य ग्रसित हो जाता है । जिसका वर्णन आचार्य वाग्भट ने विस्तार पूर्वक किया है जैसे:-

१). अपान वायु के वेग को रोकने से हानि:-

इसके वेग को रोकने से गुल्म, उदावर्त, उदरशूल तथा क्लम(सुस्ती) ये रोग हो जाते हैं । अपान वायु, मूत्र पुरीष की प्रवृत्ति में रुकावट आ जाती है । नेत्र रोग, मन्दाग्नि एवं हृदय रोग भी हो सकते हैं ।

२). मल का वेग रोकने से हानि:-

पुरीष के वेग को रोकने से पिडलियों में ऐंठन, प्रतिश्याय, सिर में पीडा का होना, उदगार (डकारों का

आना), परिकर्तिका(गुदबलियों में कैची से काटने सी पीडा होना), हृदय की गति में रुकावट आना तथा मुख से मल का निकलना आदि लक्षण होते हैं ।

३). मूत्र के वेग को रोकने से हानि:-

मूत्र के वेग को रोकने से अंग-२ टूटने की सी पीडा अश्मरी(पथरी), रोग का होना, मूत्राशय में मूत्रमार्ग में, वंक्षणो(कूल्हों) में, मूत्रवह स्त्रोतस में गवीनियों एवं वृक्कों (गुर्दों) में पीडा का होना तथा अपानवायु एवं पुरीष के वेग को रोकने से पैदा होने वाले रोगों की भी उत्पत्ति हो सकती है ।

४). छीक के वेग को रोकने से हानि:-

छीक के वेग को रोकने के कारण सिर में पीडा, कान आदि ज्ञानेन्द्रियों में दुर्बलता, मन्यास्तम्भ, अर्दित(मुखप्रदेश का लकवा) ये विकार उत्पन्न हो जाते हैं ।

५). प्यास के वेग को रोकने से हानि:-

जब प्यास लगे उस समय पानी न पीने से या पानी न मिल पाने से , मुखशोष(मुख का सुखना), शरीर में शिथिलता, बधिरता, मोह(बेहोशी), भ्रम(चक्कों का आना) तथा हृदयरोग की उत्पत्ति हो सकती है ।

६). भूख के वेग को रोकने से हानि:-

भूख के वेग को रोकने से शरीर में टूटने की सी पीडा, अरुचि(फिर खाने की इच्छा न होना अथवा स्वाद न लगना), ग्लानि(हर्षक्षय), कृशता का अनुभव होना, शूल तथा चक्कर सा आना ये लक्षण होते हैं ।

७). निद्रा के वेग को रोकने से हानि:-

निद्रा के वेग को रोकने के कारण मोह(बेहोशी), सिर तथा आंखों में भारीपन, आलस्य, जृम्भा(जम्भाई) तथा अंगों में मसल देने की सी पीडा होती है ।

८). कास का वेग को रोकने से हानि:-

कास का वेग को रोकने से कासरोग की वृद्धि श्वासरोग, अरुचि, हृदयरोग, शोष(राजयक्ष्मा), हिक्का आदि रोगों की उत्पत्ति हो जाती है ।

९). श्रमजनित श्वास का वेग को रोकने से हानि:-

श्रम के कारण उत्पन्न बढ़ी हुई श्वास की गति के वेग को रोकने से गुल्म रोग, हृदय सम्बन्धीरोग

तथा मूर्च्छारोग हो जाते हैं ।

१०). जम्भाई का वेग को रोकने से हानि:-

जम्भाई का वेग को रोकने से सिर में पीड़ा, कान आदि ज्ञानेन्द्रियों में कमजोरी, मन्यास्तम्भ तथा अर्दित रोग हो जाते हैं ।

११). आंसू का वेग को रोकने से हानि:-

आंसू का वेग को रोकने के कारण पीनस, नेत्ररोग, शिरोरोग, हृदयरोग, मन्यास्तम्भ, अरुचि, चक्करों का आना तथा गुल्मरोग की उत्पत्ति हो जाती है ।

१२). वमन के वेग को रोकने से हानि:-

वमन के वेग को रोकने के कारण विसर्प, कोठ(चकते पड़ जाना), कुष्ठरोग, नेत्ररोग, कन्डू(खुजली), पाण्डुरोग, ज्वर, कास, श्वास, जी मिचलाना, शोथरोग हो जाते हैं ।

१३). शुक्र के वेग को रोकने से हानि:-

शुक्र के वेग को रोकने से मूत्र के साथ शुक्र का निकलना, गुह्य अंग(लिंग, भग आदि) में पीड़ा, शोथ(सूजन हो जाना), ज्वर, हृदय में पीड़ा, मूत्र की प्रवृत्ति में रुकावट, अंगों में टूटने की सी पीड़ा होना, अण्डवृद्धि, अशमरी व नपुंसकता ये रोग हो जाते हैं ।

उपर दिये आधारणीय वेगों में आचार्य वाग्भट ने उदगार का वर्णन नहीं किया है परन्तु आगे वेगों की चिकित्सा का वर्णन करते हुये उन्होंने उदगार का भी वर्णन किया है । अतः उदगार को चौदवें आधारणीय वेग के रूप में माना जा सकता है ।

१४). उदगार के वेग को रोकने से हानि:-

उदगार के वेग को रोकने से अरुचि(भोजन के प्रति इच्छा न होना), शरीर में कम्पकपी का होना, हृदय एवं फुफुस की गति में रुकावट, अफ़ारा, कास तथा हिक्का(हिचकी), की उत्पत्ति हो सकती है ।